रहस्य संदेश

RNI. NO. UPHIN/2007/20715

67, एटा से प्रकाशित, शुक्रवार, 10 मार्च, 2023 पृष्ठ: 8

जायद में मक्का की खेती बन सकती है किसानों के लिए फायदेमंद: डा0 खलील खान

(रहस्य संदेश) कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर के कुलपति डॉक्टर बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान के अनुसार अनाज वाली फसलों में मक्का सबसे महत्वपूर्ण फसल है। यह फसल तीनों सीजन में रबी, खरीफ, जायद में उगाई जाने वाली एकमात्र खाद्यान्न फसल है। प्रति हेक्टेयर उत्पादन के लिहाज से इसके बराबर कोई दूसरी फसल नहीं है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि राई, सरसो, सब्जी मटर, आलू आदि की कटाई के उपरान्त खाली हुए खेत में जायद की मक्का की खेती आसानी से की जा सकती है। किसान खाली खेतों में मक्का की उपयुक्त प्रजातियों की बोआई कर अच्छी कमाई कर सकते हैं। डॉ खान ने बताया की जायद मक्का की बुवाई 20 मार्च तक किसान भाई कर सकते हैं।मक्के की सभी प्रजातियां 80 से 110 दिन में पक जाती हैं। जिससे आगामी खरीफ सीजन में धान,अरहर , मक्का , खरीफ की सब्जियां दलहन व तिलहन की खेती आसानी से कर सकते हैं । मक्का के लिए हल्की दोमट से लेकर बलुई दोमट भूमि जल निकास वाली जमीन जिसमें वायुसंचार आसानी से हो सके उपयुक्त है। मक्का का उत्पादन उसकी प्रजाति व किस्म के ऊपर काफी हद तक निर्भर करता है। बीते सालों में विश्वविद्यालयों द्वारा कई उन्नतशील किस्मो का विकास किया गया है। इनसे मक्के का औसत उत्पादन प्रति हेक्टेयर 65 से 70 कुन्तल तक प्राप्त हो सकता है। संकुल प्रजातियों से 30 से 40 कुन्तल प्रति हेक्टेयर की उपज प्राप्त हो सकती है। उन्होंने मक्का की उर्वरक के बारे में बताया कि नाइट्रोजन, फास्फोरस , पोटाश, जिंक की पूरी मात्रा बोआई के समय लाइनों में दे देनी चाहिए। शेष नाइट्रोजन को दो भागों में पहली मात्रा फसल बुवाई के 20 दिन बाद, दूसरी 50 से 55 दिन बाद टाप ड्रेसिंग के रूप में दे देनी चाहिए।

जायद में मक्का की खेती बन सकती है किसानों के लिए फायदेमंद : डॉ खलील

कानपुर । सीएसए कुलपति डॉक्टर बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान के अनुसार अनाज वाली फसलों में मक्का सबसे महत्वपूर्ण फसल है। यह फसल तीनों सीजन में रबी, खरीफ, जायद में उगाई जाने वाली एकमात्र खाद्यान्न फसल है। प्रति हेक्टेयर उत्पादन के लिहाज से इसके बराबर कोई दूसरी फसल नहीं है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि राई, सरसो, सब्जी मटर, आलू आदि की कटाई के उपरान्त खाली हुए खेत में जायद की मक्का की खेती आसानी से की जा सकती है। किसान खाली खेतों में मक्का की उपयुक्त प्रजातियों की बोआई कर अच्छी कमाई कर सकते हैं। डॉ खान ने

बताया की जायद मक्का की बुवाई 20 मार्च तक किसान भाई कर सकते हैं।मक्के की सभी प्रजातियां 80 से 110 दिन में पक जाती हैं। जिससे आगामी खरीफ सीजन में धान,अरहर , मक्का , खरीफ की सब्जियां दलहन व तिलहन की खेती आसानी से कर सकते हैं । मक्का के लिए हल्की दोमट से लेकर बलुई दोमट भूमि जल निकास वाली जमीन जिसमें वायुसंचार आसानी से हो सके उपयुक्त है। मक्का का उत्पादन उसकी प्रजाति व किस्म के ऊपर काफी हद तक निर्भर करता है। बीते सालों में विश्वविद्यालयों द्वारा कई उन्नतशील किस्मो का विकास किया गया है। इनसे मक्के का औसत उत्पादन प्रति हेक्टेयर 65 से 70 कुन्तल तक प्राप्त हो सकता है। संकुल प्रजातियों से 30 से 40 कुन्तल प्रति हेक्टेयर की उपज प्राप्त हो सकती है। उन्होंने मक्का की उर्वरक के बारे में बताया कि नाइट्रोजन, फास्फोरस , पोटाश, जिंक की पूरी मात्रा बोआई के समय लाइनों में दे देनी चाहिए। शेष नाइट्रोजन को दो भागों में पहली मात्रा फसल बुवाई के 20 दिन बाद, दूसरी 50 से 55 दिन बाद टाप ड्रेसिंग के रूप में दे देनी चाहिए।

वर्ष-17 अंक-66 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रुपए कानपुर, शुक्रवार 10 मार्च 2023

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, ऐटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात में प्रसारित

दैनिक

RNI N.UPHIN/2007/27090

नगर छाया

आप की आवाज़.....

www.nagarchhaya.com

7

अभिनेता और डायरेक्टर सतीश कौशिक नहीं रहे

जायद में मक्का की खेती बन सकती है किसानों के लिए फायदेमंदः डॉ. खलील खान

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर के कुलपति डॉक्टर बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान के अनुसार अनाज वाली फसलों में मक्का सबसे महत्वपूर्ण फसल है। यह फसल तीनों सीजन में रबी, खरीफ, जायद में उगाई जाने वाली एकमात्र खाद्यान्न फसल है। प्रति हेक्टेयर उत्पादन के लिहाज से इसके बराबर कोई दूसरी फसल नहीं है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि राई, सरसो, सब्जी मटर, आलू आदि की कटाई के उपरान्त खाली हुए खेत में जायद की मक्का की खेती आसानी से की जा सकती है। किसान खाली खेतों में मक्का की उपयुक्त प्रजातियों की बोआई कर अच्छी कमाई कर सकते हैं। डॉ खान ने बताया की जायद मक्का की बुवाई 20 मार्च तक किसान भाई कर सकते हैं।मक्के की सभी प्रजातियां 80 से 110 दिन में पक जाती हैं। जिससे आगामी खरीफ सीजन में धान,अरहर , मक्का , खरीफ की सब्जियां दलहन व तिलहन की खेती आसानी से कर सकते हैं । मक्का के लिए हल्की दोमट से लेकर बलुई दोमट भूमि जल निकास वाली जमीन जिसमें वायुसंचार आसानी से हो सके उपयुक्त है। मक्का का उत्पादन उसकी प्रजाति व किस्म के ऊपर काफी हद तक निर्भर करता है। बीते सालों में विश्वविद्यालयों द्वारा कई उन्नतशील किस्मो का विकास किया गया है। इनसे मक्के का औसत उत्पादन प्रति हेक्टेयर 65 से 70 कुन्तल तक प्राप्त हो सकता है। संकुल प्रजातियों से 30 से 40 कुन्तल प्रति हेक्टेयर की उपज प्राप्त हो सकती है। उन्होंने मक्का की उर्वरक के बारे में बताया कि नाइट्रोजन, फास्फोरस , पोटाश, जिंक की पूरी मात्रा बोआई के समय लाइनों में दे देनी चाहिए। शेष नाइट्रोजन को दो भागों में पहली मात्रा फसल बुवाई के 20 दिन बाद, दूसरी 50 से 55 दिन बाद टाप ड्रेसिंग के रूप में दे देनी चाहिए।

किसानों को दी गई मक्का की फसल बोने की सलाह

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर। मक्का का अनाज वाली फसलों में सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। इसकी फसल तीनों सीजन में रबी, खरीफ, जायद में उगाई जाने वाली एकमात्र खाद्यान्न फसल है। प्रति हेक्टेयर उत्पादन के लिहाज से इसके बराबर कोई दूसरी फसल नहीं है। चंद्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ.खलील खान किसानों को राई, सरसों, सब्जी मटर, आलू आदि की कटाई के उपरान्त खाली हुए खेत में जायद की मक्का की खेती करने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि किसान जायद मक्का की बुवाई 20 मार्च तक कर सकते हैं मक्के की सभी प्रजातियां 80 से 110 दिन में पक जाती हैं। जिससे आगामी खरीफ सीजन में धान, अरहर, मक्का, खरीफ की सब्जियां दलहन व तिलहन की खेती आसानी से कर सकते हैं। मक्का के लिए हल्की दोमट से लेकर बलुई दोमट भूमि जल निकास वाली जमीन जिसमें वायुसंचार आसानी से हो सके उपयुक्त होती है। उन्होंने बताया कि बीते सालों में विश्वविद्यालयों द्वारा कई उन्नतशील किस्मो का विकास किया गया है। इनसे मक्के का औसत उत्पादन प्रति हेक्टेयर 65 से 70 कुन्तल तक प्राप्त हो सकता है। संकुल प्रजातियों से 30 से 40 कुन्तल प्रति हेक्टेयर की उपज प्राप्त हो सकती है।

जायद में मक्का की खेती बन सकती है किसानों के लिए फायदेमंदः डॉ.खलील

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर के कुलपति डॉक्टर बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान के अनुसार अनाज वाली फसलों में मक्का सबसे महत्वपूर्ण फसल है। यह फसल तीनों सीजन में रबी, खरीफ, जायद में उगाई जाने वाली एकमात्र खाद्यान्न फसल है। प्रति हेक्टेयर उत्पादन के लिहाज से इसके बराबर कोई दूसरी फसल नहीं है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि राई, सरसो, सब्जी मटर, आलू आदि की कटाई के उपरान्त खाली हुए खेत में जायद की मक्का की खेती आसानी से की जा सकती है। किसान खाली खेतों में मक्का की उपयुक्त प्रजातियों की बोआई कर अच्छी कमाई कर सकते हैं। डॉ खान ने बताया की जायद मक्का की बुवाई 20 मार्च तक किसान भाई कर सकते हैं। मक्के की सभी प्रजातियां 80 से 110 दिन में पक जाती हैं। जिससे आगामी खरीफ सीजन में धान,अरहर , मक्का, खरीफ की सब्जियां दलहन व तिलहन की खेती आसानी से कर सकते हैं । मक्का के लिए हल्की दोमट से लेकर बलुई दोमट भूमि जल निकास वाली जमीन जिसमें वायुसंचार आसानी से हो सके उपयुक्त है। मक्का का उत्पादन उसकी प्रजाति व किस्म के ऊपर काफी हद तक निर्भर करता है। बीते सालों में विश्वविद्यालयों द्वारा कई उन्नतशील किस्मों का विकास किया गया है।

इनसे मक्के का औसत उत्पादन प्रति हेक्टेयर 65 से 70 कुन्तल तक प्राप्त हो सकता है। संकुल प्रजातियों से 30 से 40 कुन्तल प्रति हेक्टेयर की उपज प्राप्त हो सकती है। उन्होंने मक्का की उर्वरक के बारे में बताया कि नाइट्रोजन, फास्फोरस , पोटाश, जिंक की पूरी मात्रा बोआई के समय लाइनों में दे देनी चाहिए। शेष

नाइट्रोजन को दो भागों में पहली मात्रा फसल बुवाई के 20 दिन बाद, दूसरी 50 से 55 दिन बाद टाप ड्रेसिंग के रूप में दे देनी चाहिए।

(हिन्दी दैनिक) R.N.I. No. Uttbil/2018/76731

(गांव देहात की खबर, शहर पर भी नजर)

दि ग्राम टुडे

उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश से एक साथ प्रसारित

खबरें एक नजर

जायद में मक्का की खेती बन सकती है किसानों के लिए फायदेमंद..डॉ खलील खान

दि ग्राम टुडे, कानपुर।

(सत्येंद्र कुमार,रामबीर कुशवाहा)

चंद्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर के कुलपति डॉक्टर बिजेंद्र सिंह के निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर के मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान के अनुसार अनाज वाली फसलों में मक्का सबसे महत्वपूर्ण फसल है। यह फसल तीनों सीजन में रबी, खरीफ, जायद में उगाई जाने वाली एकमात्र खाद्यान्न फसल है। प्रति हेक्टेयर उत्पादन के लिहाज से इसके बराबर कोई दूसरी फसल नहीं है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है कि राई, सरसो, सब्जी मटर, आलू आदि की कटाई के उपरान्त खाली हुए खेत में जायद की मक्का की खेती आसानी से की जा सकती है। किसान खाली खेतों में मक्का की उपयुक्त प्रजातियों की बोआई कर अच्छी कमाई कर सकते हैं। डॉ खान ने बताया की जायद मक्का की बुवाई 20 मार्च तक किसान भाई कर सकते हैं।मक्के की सभी प्रजातियां 80 से 110 दिन में पक जाती हैं। जिससे आगामी खरीफ सीजन में धान,अरहर , मक्का , खरीफ की सब्जि?ां दलहन व तिलहन की खेती आसानी से कर सकते हैं । मक्का के लिए हल्की दोमट से लेकर बलुई दोमट भूमि जल निकास वाली जमीन जिसमें वायुसंचार आसानी से हो सके उपयुक्त है। मक्का का उत्पादन उसकी प्रजाति व किस्म के ऊपर काफी हद तक निर्भर करता है। बीते सालों में विश्वविद्यालयों द्वारा कई उन्नतशील किस्मो का विकास किया गया है। इनसे मक्के का औसत उत्पादन प्रति हेक्टेयर 65 से 70 कुन्तल तक प्राप्त हो सकता है। संकुल प्रजातियों से 30 से 40 कुन्तल प्रति हेक्टेयर की उपज प्राप्त हो सकती है। उन्होंने मक्का की उर्वरक के बारे में बताया कि नाइट्रोजन, फास्फोरस , पोटाश, जिंक की पूरी मात्रा बोआई के समय लाइनों में दे देनी चाहिए। शेष नाइट्रोजन को दो भागों में पहली मात्रा फसल बुवाई के 20 दिन बाद, दूसरी 50 से 55 दिन बाद टाप ड्रेसिंग के रूप में दे देनी चाहिए।